अन्ततः स्वतंत्र
दौड़ने के लिए स्वतंत्र–6
डॉ. डेविड प्लॉट

आपके पास बाइबल हो तो मेरे साथ गलातियों अध्याय 5 खोल लें। हमारा यह बाइबल अंश दौड़ प्रतियोगिता के बारे में है।

यहां पौलुस दौड़ लगाने के बारे में कह रहा है। यह अंश संपूर्ण गलातियों की पत्री में सर्वाधिक महत्त्व का है। हमने अब तक देखा है गलातियों की पत्री दो भागों में विभाजित है। अध्याय 1 और 2 का विषय था–केवल विश्वास द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाना। अध्याय 3 और 4 में व्यक्त किया गया है कि केवल अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा और केवल मसीह में। मसीह ही सर्वोच्च है और केवल मसीह के द्वारा ही हम दासत्व से निकाल कर पुत्र बनाए जाते हैं।

हम दास नहीं हैं। हम परमेश्वर के साथ पुत्र के संबन्ध में हैं।

दास नहीं, परमेश्वर के पुत्र। अतः हमने अब तक यह देखा है। इसका अर्थ गहरी थियोलॉजी है। अध्याय 5 में हम देखते हैं कि सुसमाचार के ईश्वरीय अर्थ से सुसमाचार के जीवन या अभ्यास की ओर प्रगति है। यही हम इस अध्ययन में देखेंगे। वह दौड़ लगाने की उपमा द्वारा गलातिया के विश्वासियों से कह रहा है कि वे पावन पथ से अलग होकर दौड़ रहे हैं।

यह उपमा पौलुस की जानी पहचानी है। वह प्रायः दौड़ प्रतियोगिता, युद्ध, मल्लयुद्ध आदि की उपमा देता है। वह मसीह में विश्वास लाने के लिए या धर्मी ठहराए जाने के लिए उपमाओं द्वारा व्याख्या नहीं करता है। अतः इस पर ध्यान देना अति आवश्यक है। उसने अब तक जिस भाषा का प्रयोग किया है वह एक परिदृश्य को प्रकट करने के लिए थी।

वह प्रतियोगिताओं की उपमा द्वारा दौड़ना, मल्लयुद्ध आदि द्वारा मसीह में हमारे जीवन की व्याख्या करता है। और मेरे विचार में यह अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि आज के मसीही विश्वास में हम सोचते हैं कि मसीह को ग्रहण करो, यह प्रार्थना करो तो आपको स्वर्ग का उत्तराधिकार प्राप्त हो गया और अब जीवन यात्रा सुविधाजनक है। मसीही जीवन अब आराम का है ठंडी हवा खाते हुए पहाड़ से उतरने के समान है।

हमने मसीह को ग्रहण कर लिया है और हम स्वर्ग जा रहे हैं–मुहर लग गई और अब मैं जैसा चाहूं वैसा करुं।

नये नियम में मसीही जीवन का वर्णन ऐसा नहीं है। नया नियम मसीही जीवन को संग्रामस्वरूप, युद्धस्वरूप, दौड़ स्वरूप, लम्बी दौड़ स्वरूप दर्शाता है। यह 50 गज की दौड़ नहीं है। यह एक निरन्तर दौड़नेवाली दौड़ या युद्ध है। मसीही जीवन की यही व्याख्या पौलुस करता है।

अब आप रुढ़ीवाद न होकर कैसे युद्ध करेंगे, कैसे दौड़ेंगे, कैसे संघर्ष करेंगे कि आप यह न सोचें कि आप परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग स्वयं खोज रहे हैं? यहां गलातियों अध्याय 5 और 6 हमारी सहायता करेगा। अध्याय 5 और 6 आज के युग में हमारे समझने हेतु महत्त्वपूर्ण क्यों है?

मैं गलातियों अध्याय 5 का पहला आधा भाग पढ़ना चाहता हूं तदोपरान्त हम चर्चा करेंगे कि मसीह में स्वतंत्र होना क्या है।

गलातियों 5:1–15, "मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अतः इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो। देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। क्योंकि आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं। मसीह यीशु में न खतना और न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वासी, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है। तुम तो भली–भांति दौड़ रहे थे। अब किसने तुम्हें रोक दिया कि सत्य को न मानो। ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है। मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा। परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं? फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही। भला होता कि जो तुम्हें डांवांडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते। हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" पर यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो कि एक दूसरे का सत्यनाश न कर दो।"

गलातियों 5 पद 1 यदि एकमात्र महत्त्वपूर्ण नहीं तो गलातियों की पत्री के महत्त्वपूर्ण पदों में से एक अवश्य है। क्योंकि इसमें संपूर्ण परिदृश्य निहित है। कृपया इसे रेखांकित कर लें। पौलुस ने अब तक जो कहा उसे वह इस पद में समा लेता है। यह स्वतंत्रता का पद है– "मसीह ने स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है।" स्वतंत्रता का अर्थ है, दृढ़ खड़े होना न कि दास्तव के जूए में बंध जाना। स्वतंत्रता से दौड़ो।

पौलुस मसीही स्वतंत्रता की चर्चा करता है। मेरे विचार में स्वतंत्रता शब्द संपूर्ण मसीही शब्दावली में सबसे अधिक गलत समझा गया और गलत प्रयोग किया शब्द है। सब लोग मसीह में स्वतंत्रता का दावा इसलिए करते हैं कि उन बातों में जीएं जिनका मसीह से कोई संबन्ध नहीं। अतः हम मसीह में स्वतंत्रता का बाइबल आधारित अर्थ खोजेंगें। पौलुस मसीही स्वतंत्रता के दो बैरियों की चर्चा करता है जिन्हें हमने इस बाइबल अंश में पढ़ा। और तब हम मसीही स्वतंत्रता की व्याख्या देखते हैं।

मसीही स्वतंत्रता के दो बैरी–पहला है रुढ़ीवाद। यह हम अब भली भांति देख चुके हैं। यह वास्तव में परमेश्वर का अनुग्रह पाने का प्रयास है– चाहे नियम हमारे अपने हों या परमेश्वर के हों। यह रुढ़ीवाद है। पौलुस यहां जिस रुढ़ीवाद पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है वह गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं में यहूदियों द्वारा प्रचार किया जा रहा था। उसने इसका एक उदाहरण दिया है–खतना। वह इसकी चर्चा तो पहले भी कर चुका है परन्तु अभी पढ़े गए पदों में वह इसका विशेष उल्लेख करता है।

यहूदी विश्वासियों का कहना था कि उद्धार पाने के लिए, धर्मी ठहराए जाने के लिए आपको खतना करवाना आवश्यक है। यहां ध्यान रखें कि पौलुस वास्तव में खतना के विरुद्ध नहीं था। इस पत्री में आगे चलकर वह कहता है कि उसने तीतुस को खतना करवाने से हतोत्साह किया क्योंकि ऐसा करने से अन्ततः वह सिद्ध करेगा कि उद्धार के लिए खतना आवश्यक है।

दूसरी ओर पौलुस ने तीमुथियुस को खतना करवाने के लिए प्रोत्साहित किया था। यही कारण है कि पौलुस उस पर लगाए गए खतना समर्थन के आरोप का उल्लेख करता है क्योंकि उसने तीमुथियुस को खतना करवाने का आदेश दिया था। तीमुथियुस का खतना करवाने के दो कारण थे एक तो यह कि उसकी माता यहूदी थी और दूसरा यह कि वह यहूदियों के विश्वास में आने में बाधा न हो। क्योंकि पौलुस और तीमुथियुस यहूदियों में प्रचार कर रहे थे।

अतः उन्होंने कहा कि सुसमाचार के प्रसारण के लिए यह उचित होगा कि वह भी उनकी नाईं हो जिससे कि वे मसीह में लाए जाएं। अतः पौलुस खतना के विरुद्ध नहीं था। उसका तो स्वयं खतना हुआ था। अन्तर केवल यह था कि खतना हो या अन्य अनिवार्यता अथवा नियम परमेश्वर का अनुग्रह पाने, उद्धार पाने, धर्मी ठहराए जाने के मार्ग में आए तो पौलुस उसका उग्र विरोधी था।

वह सब्त दिनों, पर्वों, बड़ी–छोटी हर एक बात के विरुद्ध था जो मनुष्य के मन में यह विचार उपजाए कि परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए यह या वह करना है।

गलातिया के विश्वासियों में खतना एक मुख्य विषय था। आज भी अनेक प्रकार के रुढ़ीवाद हमारे मध्य प्रचलित हैं। कुछ लोग सोचते हैं, यदि मैं कलीसिया का कोई काम करुं या परमेश्वर के लिए कुछ करुं तो मुझे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होगा। अनेक जन परमेश्वर के समक्ष व्यक्तिगत मनन को उद्धार विषय बना देते हैं। यदि वचन में समय और प्रार्थना ठीक चल रहे हैं तो मैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हूं। यदि नहीं तो मैं धर्मी नहीं। मुझे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त नहीं है।

अनेक जन परमेश्वर के अनुग्रह को आराधनालय के कालीन पर चलने पर, या किसी प्रार्थना पर या आराधना में हाथ उठाने पर आधारित करते हैं। बड़ा हो या छोटा कोई भी काम हम परमेश्वर के अनुग्रह को कमाने के उद्देश्य से करें तो सुसमाचार व्यर्थ ठहरेगा। यह सब रुढ़ीवाद है और सुसमाचार को हानिकारक है।

यहां खतना विषय बना हुआ था। रुढ़ीवाद का परिणाम प्रदूषण हैः पद 9 में पौलुस कहता है, थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है। अर्थात रुढ़ीवाद लेशमात्र भी हुआ तो तेज़ी से फैल जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि विष की एक बूंद संपूर्ण देह को नष्ट कर देती है।

यही कारण था कि पौलुस खतना का कट्टर विरोधी था। उसके कारण कलीसिया भ्रष्ट हो रही थी। अतः आज हमारा उत्तरदायित्व है कि हम उस हर एक एक शिक्षा का, बड़े–छोटे हर एक स्थान में विरोध करें जो सुसमाचार केन्द्रित नहीं, सुसमाचार पूर्ण नहीं। सुसमाचार से रहित शिक्षा तुरन्त पूर्णरूप से नष्ट कर देना चाहिए अन्यथा संपूर्ण कलीसिया दूषित हो जाएगी।

हमारे विचार में कोई बड़ी बात न हो परन्तु वे वास्तव में महत्त्वपूर्ण हैं जैसे विश्वास द्वारा धर्मी ठहरना और केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना, इन दोनों में महान अन्तर है। यीशु परमेश्वर का मार्ग है और यीशु परमेश्वर का एक मार्ग है, इन दोनों मे महान अन्तर है। अतः यह न सोचें कि एक ही बात है किसी को भी न मानें।

कदापि नहीं, ये अत्यधिक गंभीर बात है। हमें सावधान रहना है कि हम सुसमाचार और कलीसिया की रक्षा करें। पौलुस यही कह रहा है। कि इसका अर्थात रुढ़ीवाद का परिणाम प्रदूषण है और अन्त दण्ड भोगना है। वह अत्यधिक गंभीर है। पद 10 में वह कहता है, "मैं प्रभु में तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा।" आगे सुनिये, "परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा।"

आप कलीसिया में रुढ़ीवाद लाते हैं तो आपको दण्ड मिलेगा। पद 12 में पौलुस कहता है, "भला होता कि वे जो तुम्हें डांवांडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते।" यह कोई मनुष्य नहीं अपने कुत्ते को नपुंसक बनाने की बात कर रहा है। यह पौलुस है।

मैं इस पद के उचित प्रस्तुतिकरण के लिए प्रार्थना कर रहा था। पौलुस ऐसी कठोर बात क्यों करता है? क्या वह अभद्र शब्द का उपयोग कर रहा है।

नहीं, उसके कहने का अभिप्राय यह है कि सुसमाचार को व्यर्थ ठहरानेवाली किसी भी बात का प्रचण्ड विरोध करना चाहिए। मुझे इस विषय में लूथर की बात बहुत अच्छी लगती है। गलातियों अध्याय 1 और इस अंश के बारे में उसने कहा, "यहां एक प्रश्न यह उठता है, क्या विश्वासियों को श्राप देने की अनुमति है? जी हां, उन्हें अनुमति है सदैव नहीं और किसी भी कारण से नहीं परन्तु जब स्थिति यह हो कि वचन या उसकी शिक्षा श्रापित होने लगे और परिणामस्वरूप परमेश्वर स्वयं निन्दित हो तब आपको कहना चाहिए, 'परमेश्वर में वचन धन्य हो और वचन से तथा परमेश्वर से विलग हर बात श्रापित हो, चाहे वह प्रेरित हो या स्वर्ग का दूत।"

जान स्टॉट का प्रस्तुतिकरण मेरे मन को भाता है, "यदि हम परमेश्वर की कलीसिया और उसके वचन के निमित्त पौलुस की सी जलन रखते हैं तो हम भी यही कामना करेंगे कि विपरीत शिक्षा देनेवाले देश में से समाप्त हो जाएं।"

कलीसिया में सुसमाचार के सत्य की रक्षा के निमित्त मनोवेग रेखें। पौलुस कहता है कि लेशमात्र भी रुढ़ीवाद कलीसिया को प्रदूषित कर देता है और अन्ततः दण्ड लाता है। अतः यह पहला बैरी है– रुढ़ीवाद। मसीही स्वतंत्रता का दूसरा बैरी है– अनुमति! अब अनुमति रुढ़ीवाद का विपरीत है। रुढ़ीवाद आपको नियमों में बांधता है कि आप परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी गिने जाएं। अनुमति कहती है नियमों को पूर्णरूप से अनदेखा करो। पौलस के विपक्षी यही कहते थे, "यदि हम मात्र विश्वास से ही उद्धार पाते हैं तो हमें कुछ करने की क्या आवश्यकता है? मनुष्य को व्यभिचार में पड़ने दो। वे तो पूरे समय भोगविलास में लीन रहेंगे।"

पौलुस इस संभावना को पहले से ही जानता था– सुसमाचार को विकृत करना। हम इसे थोड़ी देर में अध्याय 5 में देखेंगे। लोग कहते हैं, "हम मसीह में स्वतंत्र हैं इसलिए अब हम जो चाहें वह करेंगे।"

इस प्रकार मसीह में स्वतंत्रता अकस्मात ही अनाचार, व्यभिचार में बदल जाती है। यह तो सुसमाचार नहीं है। लोग कहते हैं, "मैं ने मसीह को ग्रहण किया है। मैं ने प्रार्थना भी की है और मैं जानता हूं कि मैं स्वर्ग जाऊंगा, चाहे मैं कुछ भी करुं।"

पौलुस कहता है, "सुसमाचार का आधार केवल विश्वास कभी नहीं रहा है। इसमें सदैव आज्ञापालन की अपेक्षा की जाती है।" पद 7 में वह एक उपमा द्वारा उन्हें समझाता है, "तुम तो भली भांति दौड़ रहे थे। अब किसने तुम्हें रोक दिया कि सत्य को न मानो?

वह आज्ञापालन को परमेश्वर के अनुग्रह के उपार्जन का साधन नहीं कह रहा है अन्यथा यह रुढ़ीवाद होगा परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि आज्ञापालन को परिदृश्य से ही निकाल फेंकें। आज्ञापालन अब भी मसीही जीवन का एक मूल भाग है परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के उपार्जन का साधन नहीं है। पौलुस हमें समझाएगा कि यह क्या है। परन्तु इसे परित्यक्त न समझें।

"यीशु को मैं ने ग्रहण कर लिया है। बस, अब मैं स्वर्ग अवश्य जाऊंगा।" सुसमाचार मानसिक स्वीकृति नहीं है। जीवन में इस पर आचरण किया जाना है। अब सुसमाचार हमारे जीवन में कैसे व्यावहारिक बनता है? यह प्रश्न हमें पौलुस द्वारा मसीही स्वतंत्रता की व्याख्या में लाता है।

एक ओर रुढ़ीवाद है, दूसरी ओर अनुमति है और मसीही स्वतंत्रता है। पौलुस इसकी व्याख्या करता है जो अति उत्तम है।

मुझे आशा है कि यह विचार हमारे अध्ययनों को संयोजित करेगा और हमें मसीही स्वतंत्रता के चार मौलिक तत्व प्राप्त होंगे।

हम इन मौलिक तत्वों को पद 5 और 6 के आधार पर देखेंगे। हमने पद 1 को अति महत्त्वपूर्ण पद माना है। आप पद 5 और 6 को भी रेखांकित कर लें। "क्योंकि आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं।" यह एक गूढ़ अर्थ का पद है।

"मसीह यीशु में न खतना और न खतनारिहत कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।" अब हम इन दो पदों के आधार पर मसीही स्वतंत्रता देखेंगे।

पहला मौलिक तत्व– मसीही स्वतंत्रताः हम विश्वास के द्वारा जीवन जी रहे हैं। पद 5 मे उसका आरंभ इसी वाक्य से है, "आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं।"

यह कोई नई बात नहीं है। संपूर्ण पत्री में यह विचार व्याप्त है। वह हमें स्मरण करवाता है। हम सुसमाचार के ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में व्यावहारिक बना रहे हैं। हम परमेश्वर के लिए प्रयासरत नहीं हैं।

मसीही जीवन परमेश्वर के साथ नियोजक एवं कर्मचारी का संबन्ध नहीं है जैसा कि हम प्रायः सोचते हैं कि परमेश्वर हमें सेवा हेतु रखा हुआ है और हम काम करते हैं। यह परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाने का प्रयास है।

रोमियों अध्याय 4 पद 4–5 में पौलुस कहता है, "काम करनेवाले की मज़दूरी देना दान नहीं, परन्तु हक समझा जाता है।"

हम सब जानते हैं कि मज़दूर को मजदरी दान स्वरूप नहीं आभारस्वरूप दी जाती है। आप उनकी सेवा आभार चुकाने के लिए उन्हें मज़दूरी देते हैं।

अगले पद में वह कहता है, "परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।" अतः धार्मिकता आभारव्यक्ति नहीं है। परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य होना भी हमारी सेवा के बदले उसकी आभारव्यक्ति नहीं है। यह हमारे विश्वास का परिणाम है, हमारे कामों का नहीं।

पद 2, 3, 4 में पौलुस तीन पक्षों से इस पर प्रहार करता है। पद 2 सुनें, "देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा।" अर्थात यदि आप प्रयास करेंगे तो पहली बात, मसीह से आपको कुछ लाभ नहीं होगा।

यदि हम परमेश्वर के लिए काम करें और सप्ताह प्रति सप्ताह एक साथ अधिकाधिक प्रयास करें तो पहले, हम मसीह के लाभ से वंचित होते हैं। आपके लिए मसीह का मान समाप्त हो जाएगा। पौलुस कहता है कि यदि आप कामों पर निर्भर करेंगे तो आपको मसीह की आवश्यकता नहीं है। आप स्वयं ही परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त कर लेंगे तो मसीह के उस काम की क्या आवश्यकता जो उसने क्रूस पर किया।

आपको या तो हर काम के लिए कलीसिया की आवश्यकता होगी या किसी भी काम में मसीह की आवश्यकता नहीं होगी। छोटा सा भी अपना प्रयास करने पर आप या मैं मसीह के लाभ से वंचित हो जाते हैं और मसीह के मान को व्यर्थ ठहराते हैं। हमें मसीह का लाभ नहीं मिलता।

दूसरा, हम व्यवस्था का बोझ अपने ऊपर बढ़ाते हैं। पद 3 में पौलुस कहता है, "मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं, कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी।" एक बात में व्यवस्थापालन आपको हर बात में व्यवस्थापालन पर बाध्य करता है और इस प्रकार आप संपूर्ण व्यवस्था के पालन के बोझ तले दब जाते हैं। इस प्रकार हम मसीह के लाभ से वंचित होते हैं, व्यवस्था के बोझ तले दबते हैं और हम परमेश्वर के अनुग्रह से चूक जाते हैं।

पद 4 में पौलुस कहता है, "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।" यह पद उलझन में डाल देता है। अनेक जन इस पद को पढ़कर सोचते हैं, "अनुग्रह से गिर जाने का अर्थ क्या उद्धार से वंचित होना है?" हमने तो धर्मशास्त्र में कहीं नहीं देखा कि कोई उद्धार पाकर उससे वंचित हुआ हो।

गलातियों में पौलुस की शिक्षा यह नहीं है। संपूर्ण पत्री में पौलुस गलातिया प्रदेश के विश्वासियों को बार–बार भाई कह रहा है और उसने उन्हें एक बार भी अधर्मी नहीं कहा। पौलुस की शब्दावली में यह शब्द नहीं है। वह ऐसा परिदृश्य प्रस्तुत नहीं करता है। वह अधर्मी ठहरने की चर्चा कहीं नहीं करता है।

सच तो यह है कि हम यहां मसीह के आत्मा पर विश्वास व्यक्त किया पाते हैं कि वह उन विश्वासियों को उबार लेगा। मूल भाषा में गिरने के शब्द का अर्थ है हाथ से छूट जाना। वह उनसे कह रहा है, "तुम ने अनुग्रह द्वारा उद्धार पाया और तुम उसे थामें हुए थे परन्तु अब तुम उस अनुग्रह को हाथ से जाने दे रहे हो और अनुग्रह द्वारा उद्धार न पाने का सा आचरण कर रहे हो।"

अतः प्रयास त्याग कर अनुग्रह को थामे रहो। लूथर ने कहा, "इससे अधिक पागलपन और दुष्टता क्या हो सकती है कि परमेश्वर का अनुग्रह और पक्ष खोना चाहे और मूसा की व्यवस्था को रोक रखें जो क्रोध और अन्य सब बुराइयों को आपके लिए अनिवार्य बनाता है। परमेश्वर के लिए प्रयास न करें। प्रयास करने का प्रयास भी न करें।"

यदि हम प्रयास न करें तो क्या करें? मसीही विश्वास क्या है? मसीही विश्वास प्रयास नहीं परमेश्वर में भरोसा करना है। देवियों और सज्जनों हम कुछ नहीं करते हैं। परमेश्वर करता है। यह नियोजक–कर्मचारी संबन्ध नहीं है जिसमें आप सोचें कि परमेश्वर कर्मचारी है। कदापि नहीं, हम देख चुके हैं कि परमेश्वर की प्रसन्नता हमारे कामों के कारण नहीं है।

परमेश्वर की प्रसन्नता किसके काम पर आधारित है? हमारे लिए मसीह के काम पर। जिसे हम अपना काम समझते हैं– प्रार्थना, वचन का अध्ययन, कलीसियाई सेवा अन्य सब काम वास्तव में, हम में परमेश्वर के काम हैं। परमेश्वर के लिए हम जो भी करते हैं उसमें से एक भी काम ऐसा नहीं है जो वह हमारे लिए और हम में न करता हो।

गलातियों अध्याय 1 में हमारे कार्य सब मसीह के सामर्थ्य द्वारा किए जाते हैं। परमेश्वर के लिए हमारी भेंटें भी परमेश्वर की ओर से भेंटें हैं। वह हम में सब काम करता है क्योंकि हम में हो रहे हर एक काम से उसकी महिमा बढ़ती है। तो परिदृश्य यह है।

अतः हम परमेश्वर के लिए काम नहीं करते हैं, हम उस पर भरोसा रखते हैं। हम विश्वास का जीवन जीते हैं। पद 2, 3 और 4 में वह यही कहता है– विश्वास द्वारा, विश्वास द्वारा, विश्वास द्वारा। अतः स्वतंत्रता का जीवन विश्वास का जीवन है। सब कुछ मसीह में विश्वास पर परिक्रमा करता है। यह पहला मूलभूत तथ्य है।

दूसरा मूलभूत तथ्य– मसीही स्वतंत्रताः हम विश्वास का जीवन जीते हैं और हम आत्मा के द्वारा जीते हैं। पद 5 में पौलुस कहता है, "आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं।" पवित्र आत्मा संपूर्ण गलातियों की पत्री में और विशेष करके यहां पद 5 और 6 में व्यक्त है। इस अध्याय के उत्तरार्ध में हम और अधिक इसे देखेंगे।

अध्याय 5 और 6 आत्मा से भरे हुए जीवन और आत्मा की भूमिका, तथा पवित्र आत्मा द्वारा हमारे परिवर्तन का चित्रण है।

अतः मसीह स्वतंत्रता आत्मा के जीवन पर निर्भर करती है। आत्मा हम में क्या करता है? सबसे पहले, वह हमें मसीह की उपस्थिति के अनुभव योग्य बनाता है। हमने यह गलातियों 2:20, 3:5 में देखा है। "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा पर मसीह मुझ में जीवित है।"

यह कैसे होता है कि मसीह आपमें या मुझ में अन्तर्वास करे। वह किसके द्वारा हम में वास करता है? आत्मा के द्वारा। हम में अन्तर्वासी परमेश्वर का आत्मा हमें मसीह की उपस्थिति का अनुभव प्रदान करता है। वही हमारे जीवन को मसीह से जोड़ता है। यदि आत्मा न हो तो मसीह यहां और हम वहां होंगे।

आत्मा के कारण मसीह हम में अन्तर्वास करता है। यह मसीह स्वतंत्रता के लिए एक महान बात है क्योंकि हम मसीह से अलग नहीं हैं परन्तु हम मसीह के लिए स्वतंत्र हैं। यह तो प्रत्यक्ष ही है परन्तु अनेक विश्वासियों का सोचना है कि मसीही स्वतंत्रता का अर्थ है, "मैं जैसा चाहूं वैसा रहूं। मैं जो चाहूं करुं। मैं अपने निर्णय स्वयं लूं। मैं अपनी जीवनशैली का चुनाव स्वयं करुं।"

यदि हमारा विचार यह है तो हम वास्तव में स्वीकार करते हैं कि हम दासत्व में रह रहे हैं और स्वतंत्र नहीं हैं। हम स्वयं के और अपनी अभिलाषाओं के दास हैं।

पापी स्वभाव। हम सोचते हैं कि हम अपनी अभिलाषाओं के लिए स्वतंत्र हैं परन्तु हम वास्तव में स्वयं के दास हैं। आपको इनसे मुक्ति मिल गई है। आप स्वयं से और पाप से मुक्त हैं। आप किसके लिए स्वतंत्र हैं? मसीह के लिए। अब आप मसीह जैसा चाहता है वैसा जीवन व्यतीत करने के लिए स्वतंत्र हैं। पहले आप स्वतंत्र नहीं थे। परन्तु अब अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह से, मसीह में विश्वास के द्वारा आप अपनी सृष्टि के उद्देश्य के निमित्त मसीह के लिए जीने को स्वतंत्र हैं।

आप अपने जीवन में मसीह की उपस्थिति के सौंदर्य, महिमा और आनन्द के अनुभव के लिए स्वतंत्र हैं। इसी के लिए आप स्वतंत्र हैं। आप मसीह से मुक्त अपनी इच्छा पूर्ति के लिए जीवित नहीं हैं वरन् आप स्वयं से मुक्त मसीह जैसा चाहे वैसा जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हैं। इसका सौंदर्य यह है कि मसीह आपकी इच्छा, आपकी अभिलाषा को बदलता है जिससे कि आपकी इच्छा मसीह की इच्छा हो, न कि संसार की इचछा, न कि आपका अहम्–पापी स्वभाव की इच्छा।

यही हम गलातियों अध्याय 5 में अगले पदों में देखेंगे। परिदृश्य वही है कि आत्मा हमें मसीह की उपस्थिति का अनुभव ही नहीं कराता है वरन् हमें मसीह की आज्ञाओं का आनन्द लेने योग्य बनाता है। यहां यह बड़ा ही उत्साहवर्धक बन जाता है। हम व्यवस्था और आत्मा में आने पर व्यवस्था से हमारे संबन्ध की अधिक चर्चा करने के लिए रुकेंगे परन्तु परिदृश्य यहां यह है कि मसीह आत्मा हमारे पक्ष में करता है।
मसीह का हम में अन्तर्वास का अर्थ यह नहीं कि हम मसीह के वचन अर्थात उसकी आज्ञाओं से मुक्त हैं। स्मरण रखें कि हम मसीह के लिए स्वतंत्र हैं, उसके वचन के लिए स्वतंत्र हैं, उसकी आज्ञाओं के लिए स्वतंत्र हैं। अतः हम नये नियम में यह नहीं कह सकते कि हम स्वतंत्र हैं अतः वचन को अनदेखा करके स्वेच्छाधारी जीवन व्यतीत करें।

नहीं, वरन् हम मसीह की आज्ञाएं, उसकी व्यवस्था, उसके वचन के पालन का जीवन जीएंगे। आपको यूहन्ना 15 स्मरण होगा, "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो क्या? मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

"मैं ने ये बातें तमु से इसलिए कहीं हैं कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे ही नहीं वरन् उनके आनन्द में रहोगे। तुम उन्हें पूरा करना चाहोगे। तुम उनकी लालसा करोगे क्योंकि मेरे साथ तुम्हारा संबन्ध प्रेम का है। यही कारण है कि यूहन्ना– पहली पत्री में कहता है– अध्याय 5 पद 3, "परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें।" इस पर विचार करें कि इस पद को हम रुढ़ीवाद क्यों न कहें? उसकी आज्ञाओं को मानें, यह करें तो हमें परमेश्वर

का प्रेम प्राप्त होगा। उसके कहने का अर्थ यह नहीं है। यह धर्मशास्त्र की शिक्षा नहीं है। धर्मशास्त्र कहता है कि यह आज्ञापालन है। यह परमेश्वर के लिए प्रेम है– दोनों साथ साथ चलते हैं। और उनका फल हम में अन्तर्वासी आत्मा है।

यही कारण है कि 1 यूहन्ना 5:3 में आगे लिखा है कि उसकी आज्ञाओं में बोझ नहीं है। जब हम व्यवस्था के दास थे तब व्यवस्था हमारे लिए एक बोझ था जिसे हम उठा रहे थे परन्तु अब मसीह के वचन हमारा आनन्द हैं क्योंकि वह अपने आत्मा के द्वारा हम में अन्तर्वास करता है इसलिए हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हें, हम उसको करने में आनन्द का अनुभव करते हैं।

नया नियम हमारे लिए जीवित है। हम उसकी व्यवस्था से आनन्दित होते हैं। हम उसके वचन से प्रेम करते हैं क्योंकि हम में अन्तर्वासी मसीह अपने वचन से प्रेम करता है और हमारा जीवन बदल रहा है। विश्वास के द्वारा आत्मा से यही होता है। परिणामस्वरूप हम पाप के लिए नहीं पाप से स्वतंत्र हैं।

आगे चलकर पद 13 में पौलुस कहता है कि हम पाप में मगन होने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। हम तो पाप से स्वतंत्र हैं। हम यह नहीं कह सकते कि "हमारा उद्धार हो चुका है। अतः हम जितना चाहें पाप करें, मैं स्वर्ग में तो जाऊंगा ही।" इसमें बुद्धिमानी नहीं है। इस कारण सुसमाचार अर्थहीन हो जाता है। आप पाप के लिए नहीं, पास से मुक्त हैं। अतः विश्वास के द्वारा आत्मा में स्वतंत्र रहें।

आपने देखा कि पौलुस रुढ़ीवाद और निरंकुशता के बारे में कया कहता है। रुढ़ीवाद के लिए कि विश्वास में जीएं–परमेश्वर के लिए कार्य न करें, बस उसमें भरोसा रखें। निरंकुश व्यवहार कदापि नहीं। क्या आपमें मसीह का आत्मा है? यदि हां तो आप संसार की बातों में जीने को स्वतंत्रता नहीं कहेंगे। नहीं, आपमें अन्तर्वासी मसीह का आत्मा दिन–रात आपको मसीह के वचन के पालन की योग्यता प्रदान करेगा। आप विश्वास के द्वारा आत्मा में उस पर भरोसा रखेंगे।

स्वतंत्रता अच्छी बात है और बाइबल आधारित है। अति उत्तम–विश्वास के द्वारा आत्मा में। अगला तथ्य और भी अच्छा है। हम विश्वास के द्वारा आत्मा में आशा लिए रहते हैं। तीसरा आधारभूत तथ्य और मसीही स्वतंत्रता है हम आशा लिए रहते हैं। पद 5 में पौलुस कहता है, "क्योंकि आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं। हम प्रयास नहीं करते हैं। हम बाट जोहते हैं।"

यहां पौलुस मसीही जीवन को प्रतीक्षा का जीवन कहता है। निःसन्देह वह दौड़ने की बात करता है परन्तु फिर भी यह प्रतीक्षा का जीवन है। अब प्रश्न यह है, "आप दौड़ने और प्रतीक्षा करना एक साथ कैसे करेंगे? आप ऐसा मसीही जीवन कैसे जीएंगे जिसमें आपको कुछ नहीं करना है, केवल प्रतीक्षा करना है?"

उसके कहने का अर्थ क्या है? जब वह कहता है, "बाट जोहते हैं" तो उसके कहने का अर्थ क्या है? यहां "बाट जोहने" से अभिप्राय है कि भविष्य में कुछ तो है जिसकी ओर हमारी दृष्टि है, जिसकी हमे प्रत्याशा है। हम किस की बाट जोहते/प्रतीक्षा करते हैं? वह क्या है जिसकी हमें कामना है परन्तु भविष्य में है? पौलुस कहता है कि हम ललकते हैं, हम कामना करते हैं, हम लालसा करते हैं, हम प्रतीक्षारत हैं, हम प्रभु की धार्मिकता के विश्वास की बाट जोहते हैं। "हम आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं।"

अब यहां मेरे कहने का अर्थ यह न समझें कि हमारा उद्धार निश्चित नहीं या यह कि हमारा उद्धार हमारे प्रयासों पर निर्भर है। मैं यह कदापि नहीं कहता क्योंकि यह पौलुस की शिक्षा नहीं है। पौलुस का कहने का अर्थ है कि एक दिन आनेवाला है जब हम परमेश्वर के समक्ष खड़े होंगे।

हम मसीह में धर्मी गिने जा चुके हैं। हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जा चुके हैं। मसीह के द्वारा अब परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति है। हमारा उसके साथ मेल हो गया है। हम उसकी धार्मिकता में आवृत्त किए जा चुके हैं। अब ये सब सच्चाईयां हैं परन्तु हम जानते हैं कि भविष्य में एक दिन आनेवाला है जब हम परमेश्वर के समक्ष खड़े होंगे और परिपूर्णता का अनुभव करेंगे– मसीह में अपनी धार्मिकता का पूर्ण प्रकाशन और बोध होगा।

पौलुस कहता है कि हम उस दिन के लिए ललकते हैं। हम उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं। मुझे यह अति मनभावन है। पौलुस कहता है कि वह न्याय के दिन की प्रतीक्षा नहीं कर पा रहा है। मसीह की दी हुई धार्मिकता की परिपूर्णता का अनुभव पाने के लिए वह प्रतीक्षा नहीं कर पा रहा है। कैसा महान परिदृश्य!

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं, "क्या आप अधीर आशा से उस दिन के लिए ललकते हैं जिस दिन आप परमेश्वर के समक्ष खड़े होंगे– न्याय के दिन? हम न्याय के दिन को ऐसे अन्तग्रर्हण नहीं करते हैं।" अधिकांश जन नहीं विचारते, "मैं अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में हूं कि अपने जीवन का लेखा देने के लिए खड़ा होऊंगा।" और जब तक हम रुढ़ीवाद में रह रहे हैं तो हम उस दिन की प्रतीक्षा नहीं करेंगे क्योंकि हमारे पास करने के लिए बहुत काम होगा।

अभी थोड़ा और काम करना होगा कि सफलता निश्चित करें। दूसरी ओर यदि हम निश्चिन्त जीवन जी रहे हैं तौभी हम उस दिन की प्रतीक्ष में नहीं हैं। हम अपनी जीवनशैली से यह प्रकट करते हैं। हम इस संसार का आनन्द भोग रहे हैं। हमारे विचार इस संसार में व्यस्त हैं।

परन्तु स्वतंत्रता का अर्थ है उस दिन की अधीरता से प्रतीक्षा करना जब मसीह की संपूर्ण धार्मिकता हमारे जीवन में होगी और हमारा उद्धार पूरा होगा। परन्तु हम अभी वहां तक नहीं पहुंचे हैं। इस कारण हम उसकी धार्मिकता के आश्वासन के लिए ललकते हैं और उसकी धार्मिकता में बढ़ते जाते हैं। परमेश्वर के समक्ष हम धर्मी हैं। हम मसीह में धर्मी गिने जाते हैं क्योंकि हम मसीह में विश्वास करते हैं।

हम जानते हैं कि हम मसीह की धार्मिकता के आधार पर स्वर्ग जाएंगे। परन्तु हम अब भी पाप करते हैं, क्यों? हम पाप से संघर्षरत रहते हैं जैसा पौलुस कहता है। हम उसकी धार्मिकता की परिपूर्णता का अनुभव पाना चाहते हैं परन्तु हम पाप के संघर्ष में व्यस्त हैं। इसे मसीही जीवन में परिवर्तन आता है।

यह स्वतंत्रता है। आप विश्वासियों को यह सत्य बता सकते हैं– वे जो विश्वास द्वारा उद्धार पाए हुए हैं और आशा रखकर आत्मा में जी रहे हैं क्योंकि जब हमारी आंखे स्वर्गवासी मसीह की धार्मिकता पर लगी हुई हैं और हम उस दिन की प्रतीक्षा में जी रहे हैं उसकी धार्मिकता की पूर्णता का अनुभव करेंगे इसलिए जब हम पाप करते हैं तो हम सोचते हैं, "नहीं, नहीं, मैं यह नहीं करुंगा। मैं तो इससे मुक्त हूं। मैं इस काम के लिए स्वतंत्र नहीं हूं। यह मेरे लिए नहीं है। मुझे तो उसकी धार्मिकता की परिपूर्णता चाहिए।"

मैं धार्मिकता उपार्जन हेतु प्रयासरत नहीं हूं। मेरी धार्मिकता तो स्वर्ग में है और में तो उस दिन की प्रतीक्षा नहीं कर पा रहा हूं जब मैं उस परिपूर्णता का अनुभव करुंगा। मैं उसमें आत्मा के द्वारा अब और प्रतिदिन अधिकाधिक जीना चाहता हूं। मैं उस धार्मिकता में बढ़ना चाहता हूं। स्वतंत्र जीवन अच्छा है, बहुत अच्छा है परन्तु आसान नहीं है। यह एक दौड़ वरन! लम्बी दौड़ है। यदि यह 26 मील है तो आप अभी दो मील ही दौड़े हैं परन्तु आप जानते हैं कि 26वां मील आनेवाला है। आप जानते हैं कि आप अन्तिम रेखा पार करेंगे। आप जानते हैं कि विजय आप ही की है।

यह तो निश्चित नहीं कि यह अगले सप्ताह हो परन्तु निश्चय ही यह मसीही जीवन में है। आप जानते हैं कि एक दिन आप अन्तिम रेखा पार करेंगे और परमेश्वर कहेगा, "मसीह में धर्मी हो।" अतः आप दौड़ रहे हैं और आप इस परिपूर्णता के अनुभव में जीवन निर्वाह कर रहे हैं। इस विचार से आपके दौड़ने की

मानसिकता में परिपवर्तन आ जाता है। आप निराशा के साथ नहीं दौड़ते, आप पराजय को मानकर नहीं दौड़ते हैं। आपकी दौड़ ऐसी नहीं होगी जिसमें आपके सामने अन्य बातें हों।

नहीं, आप इसलिए दौड़ रहे हैं कि आपको अन्तिम रेखा पार करनी है। यह मसीही जीवन का परिदृश्य है। स्वतंत्रता अच्छी है। यही पौलुस रोम के विश्वासियों को लिखता है कि हम जानते हैं, संपूर्ण सृष्टि कहरती है। वह तो अब भी जच्चा की सी पीड़ा का अनुभव करता है। पौलुस ही नहीं, हम भी जिनमें अन्तर्वासी पवित्र आत्मा है प्रतीक्षा करते हुए कहरते हैं। हम गोद लिए जाने के लिए अधीर होकर प्रतीक्षा करते हैं– हमारी देह की मुक्ति के लिए।

वह कष्ट वहन की चर्चा करता है। वह कहता है, "यह अब एक दिन समाप्त होगा। मैं कहरता हूं और प्रतीक्षा में हूं। क्योंकि इस आशा में हमारा उद्धार है। जो दिखाई देती है वह आशा नहीं है। जो हमारे पास नहीं होता है उसी की हम आशा रखते हैं और धीरज धरकर उसकी प्रतीक्षा करते हैं।"

हमारे एक परिचित दम्पत्ति का बच्चा पिछले जून महीने इस संसार से कूच कर गया और इसी बीच ज्ञात हुआ कि उसकी पत्नी को कैंसर है और दो सप्ताह पूर्व उसकी मृत्यु हो गई। अब यह भाई छः महीनों से अत्यधिक कष्टों में रहा है।

उसने कहा, "मैं पूर्ण मुक्ति की प्रतीक्षा में हूं– संपूर्ण उद्धार की बाट जोहता हूं। एक दिन यह घोषणा की जाएगी और धार्मिकता की परिपूर्णता का अनुभव करुंगा।" यही जीवन है जो स्वतंत्र है– आशा, मृत्यु का भय नहीं। यदि आप मृत्यु से भयभीत हैं तो मैं विनती करता हूं कि आप मसीह की धार्मिकता पर भरोसा रखें जो आपके लिए है।

आपके लिए मसीह की धार्मिकता में विश्वास करें। अपने आप को प्रयासों में व्यस्त न करें कि इस भय से मुक्ति पाने के लिए आज आप क्या करके आश्वासन पाएंगे। नहीं, इसी पल मसीह की धार्मिकता में विश्वास करें। उससे कहें, "हां, मैं विश्वास करता हूं कि तू मेरे पापों के लिए क्रूस पर मर गया और मृतकों में से जी उठा और तेरी धार्मिकता मेरे लिए निर्मोल है। वह आभारव्यक्ति नहीं, एक वरदान है। मुझे तुझ पर पूरा भरोसा है।"

मुझे बदल दे। मैं तेरे आत्मा में विश्वास, रखकर जी रहा हूं। मुझे वह आशा चाहिए जो तू देता है। वह निश्चय ही देता है। इसी समय करें। उस में अभी विश्वास करें। अनन्त जीवन इसी पर आधारित है। विश्वास द्वारा आशा रखते हुए जीने के लिए स्वतंत्र हों।

मसीही स्वतंत्रता का अन्तिम मूलभूत तथ्य – यह अधिकाधिक अच्छा होता जाता है– विश्वास के द्वारा आत्मा में, आशा के साथ, प्रेम से। हम प्रेम के द्वारा जी रहे हैं। पद 6 में पौलुस कहता है, "मसीह यीश में न खतना और न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।" यही एक बात है– विश्वास प्रेम के द्वारा व्यक्त किया जाए। यह एक स्मारक वाक्यांश हैः "विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।"

पौलुस यह नहीं कह रहा है, "हम विश्वास और प्रेम के द्वारा धर्मी गिने जाते हैं। वह प्रेम को जोड़ नहीं रहा है। हम धर्मी तो विश्वास के द्वारा ही गिने जाते हैं परन्तु विश्वास प्रेम के द्वारा प्रकट होता है।" यह बात याकूब की पत्री, यूहन्ना की पहली पत्री में देखी जा सकती है। याकूब कहता है कि कर्मों बिना विश्वास मृतक है। यूहन्ना अपनी पहली पत्री में लिखता है कि यदि आपमें परमेश्वर का प्रेम नहीं तो आप परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं।

आपका धर्मी ठहराया जाना तो केवल विश्वास के द्वारा ही है जो हम बार–बार देखते हैं परन्तु यह विश्वास प्रेम के द्वारा ही प्रकट होगा। पौलुस कहता है कि उद्धार के लिए विश्वास ही आवश्यक है। यदि प्रेम को उद्धार का साधन बनाएं तो यह फिर से रुढ़ीवाद होगा। परन्तु प्रेम विश्वास की आवश्यक अभिव्यक्ति है। यीशु ने कहा कि उसके शिष्य प्रेम के द्वारा ही जाने जाएंगे।

आज 30000 बच्चे या तो भूख से या रोगों से मर रहे हैं– और यदि हम ग़रीबों के प्रति बहरे बन जाएं तो यह विश्वास नहीं जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।

तो इसका अर्थ क्या यह है कि हम प्रेम प्रदर्शन हेतु बाहर निकल पड़ें। नहीं, इसका अर्थ है कि हमारे विश्वास में समस्या है क्योंकि उसमें प्रेम नहीं है। स्मरण रखें यदि मसीह आप में अन्तर्वासी है तो दूसरी बात, उससे याचना करें कि वह आपमें ऐसा प्रेम उत्पन्न करे। उस पर इस काम का भरोसा रखें। उससे कहें, "मुझे आवश्यकता है कि तू यह करे।"

परिदृश्य यह है। पौलुस पद 13 में प्रेम पर ही बल दे रहा है, "हे भाइयों तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो, परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए स्वतंत्रता बने, वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।"

यह बड़ी विचित्र बात है कि आप स्वतंत्र हैं फिर भी दास बनें। पौलुस कहता है कि हम व्यवस्था के दासत्व से स्वतंत्र हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि व्यवस्था बुरी है और हम उसका त्याग कर दें– विशेष करके मसीही की व्यवस्था। गलातियों अध्याय 6 पद 2 में हम देखेंगे, एक दूसरे का भार उठाओ और मसीह की व्यवस्था पूरी करो।

अन्ततः व्यवस्था भली है, मसीह के वचन भले हैं, मसीह की आज्ञाएं भली हैं– नई वाचा, नया परिदृश्य, मूसा की व्यवस्था नहीं। यहां का दृश्य यह है कि हम व्यवस्था का बोझ उठाकर परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करना चाहते हैं। प्रेम के दास बन कर तो हम अन्यों के लिए आनन्दपूर्वक जीते हैं। मेरे विचार में इसका निकटतम् उदाहरण विवाहित जीवन है।

यद्यपि इफिसियों अध्याय 5 में इसका उद्देश्य प्रकट है, यह अपर्याप्त है। प्रेम के दास बनना सीखना है तो आपको यीशु को देखना होगा। मरकुस अध्याय 10 पद 45 में यीशु कहता है कि मनुष्य का पुत्र सेवा टहल करवाने नहीं आया परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे। क्या करे? सेवा टहल करे। क्यों? क्या वह आभार के बोझ से दबा था? क्या यह उसे करना आवश्यक था? क्या यह उसका दायित्व बोझ था? नहीं, केवल इसलिए कि यह उसकी इच्छा थी।

वह सेवा करने और अनेकों को छुड़ौती के लिए अपनी जान देने आया था। प्रेम के दासत्व को समझना है तो मसीह के दुःख और मृत्यु को देखें, क्रूस को निहारें। मसीह जो इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए परन्तु इसलिए कि सेवा करे और अपना जीवन बलिदान करे यदि वह आप में अन्तर्वासी है तो आपका जीवन मनुष्यों के संबन्ध में आमूल रूप से बदल जाता है। क्या यह सच नहीं?

क्या इसमें बुद्धि की बात नहीं? मसीह आपमें अन्तर्वासी हो तो आप अपने ही लिए कैसे जी सकते हैं? यह संभव नहीं। आप मनुष्यों की सेवा का जीवन जीएंगे। आप अन्यों के लिए अपना जीवन निछावर कर देंगे। यह नये नियम का समुदाय है, कलीसिया है। हम प्रेम के दास होने के लिए स्वतंत्र हैं।

अतः हम स्वार्थ के पाप मे लिप्त नहीं हो सकते हैं। यही पद 13 में लिखा है, "ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर बने।" यह अति गंभीर विषय है। हम अपनी स्वतंत्रता को बचाना चाहते हैं। हम स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हैं। हम स्वतंत्रता को पकड़े रहना चाहते हैं। हम स्वतंत्रता पर वाद विवाद करते हैं परन्तु क्या हम इसका अर्थ स्पष्ट कर सकते हैं?

क्या मूल में इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी इच्छा का जीवन जीना चाहते हैं? आज हमारे देश में चल रहे अभियानों में गहराई से विचार करें। हम अन्ततः अनियंत्रित रहना चाहते हैं।

किसी समाजशास्त्री ने कहा है, "स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि किसी का हस्तक्षेप न हो। आप पर किसी के जीवन मूल्य जीवनशैली, विचार थोपे न जाएं। काम में, परिवार में, राजनीति में अपने अधिकारियों के अधीन न हों।"

जो चाहे करें, जो चाहे विश्वास करें, जो चाहे सोचें, जैसा चाहे जीवन जीएं– यही स्वतंत्रता है। मैं चाहता हूं कि हम इस पर ध्यान दें कि हम स्वतंत्रता की इस विकृत धारणा का कैसे निर्वाह करते हैं। हम इसे कलीसिया में लाते हैं और सोचते हैं– मैं मसीह का अनुसरण करुंगा परन्तु जीवन अपनी इच्छा से जीऊंगा। मैं यीशु के अनुसरण में भी अपनी शर्तें रखूंगा। जब वह कहेगा अपना सब कुछ बेचकर मेरे पीछे हो ले ते वह बात मेरे लिए नहीं होगी। मैं धर्मशास्त्र की उन्हीं बातों को ग्रहण करुंगा जिनके क्षेत्र मेरे जीवन के अनुकूल होंगे। यह नये नियम का मसीही जीवन नहीं है। यह स्वयं का दासत्व है जिससे हमें मुक्त किया गया है। हम हमारी सम्पदा का दासत्व है। हमें इसी से मुक्त किया गया है। सत्य तो यह है कि हमें स्वार्थ के पाप और अभिलाषाओं में लिप्त न होने के लिए स्वतंत्र किया गया है।

अब हम एक दूसरे की सेवा हेतु निःस्वार्थ प्रेम के लिए स्वतंत्र किए गए हैं। यीशु ने कहा कि संपूर्ण व्यवस्था का सार है, अपने पड़ोसी से अपने बराबर प्रेम रख। क्या आपके मन को या नहीं भाता है? पौलुस कहता है कि मनुष्य में आत्म प्रतिष्ठा की प्रवृति है। इसे अन्यों के प्रति आपके दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए प्रयोग करें। बाइबल में लिखा है कि भूखे होने पर आपमें भोजन की प्रबल इच्छा होती है। आप स्वयं जानते हैं कि आप उसकी कैसी सुधि लेते हैं और प्रवधान करते हैं।

आज 30,000 बच्चे भूख से और रोगों से मर रहे हैं। क्या आपमें उनके लिए भोजन उपलब्ध करवाने के लिए प्रबल इच्छा है? आप कैसे आभारी हैं कि किसी ने आपको यीशु से मिलाया? क्या आप में उन करोड़ों मनुष्यों के लिए प्रबल इच्छा है कि वे भी मसीह को जानें? ऐसा जीवन जीएं।

आप जानते हैं कि जीवन में न्यायोचित होने के लिए आपमें कैसा जोश है? आपके पास उपस्थित व्यक्ति के लिए आपमें ऐसे मनोवेग का जीवन होना है। यह एक आसामान्य जीवनशैली है और पौलुस यही कहता है। आपमें यह प्रेम कैसे उत्पन्न होगा? विश्वास के द्वारा आत्मा से। यही प्रेम द्वारा प्रकट विश्वास है। यह आत्मा का फल है। हमने वह पद नहीं पढ़ा है जहां लिखा है कि आत्मा का फल प्रेम है। सब यहीं से आरंभ होता है।

आत्मा ऐसा ही प्रेम उत्पन्न करता है। अतः हमें मसीह से कहना होगा, "मुझे तेरी आवश्यकता है।" भाइयों और बहनों, सम्पदा लोलुपता और भोगविलास और ग़रीबों को अनदेखा करना विश्वास की कमी दर्शाता है। यह विश्वास की कमी है क्योंकि हमें परमेश्वर में विश्वास रखना है कि वह इन सब वस्तुओं से उत्तम है। हमें भरोसा रखना है कि मसीह इन सब वस्तुओं से अधिक भला और संतोषदायक है।

जब हम मसीह से मांगते हैं कि वह हमें इन बन्धनों से मुक्त कराए और हमें उसका सा प्रेम प्राप्त हो तो हम इन वस्तुओं से कैसे छुटकारा पाएंगे और ग़रीबों को कैसे समर्पित होंगे? यह हम तब ही कर पाएंगे जब मसीह हमारे मन पर प्रभुता करे। हमारे लिए आवश्यक है कि वह हमारे मन विश्वास और आत्मा के द्वारा ले ले। आवश्यक है कि हम उसे हममें यह काम करने दें।

यही एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा हम सब जातियों में मसीह की महिमा के निमित्त सर्वस्व त्याग करें और वह है– मसीह हमारे मन को आमूल रूप से ले ले और यह प्रेम द्वारा प्रकट विश्वास होगा। यही एकमात्र मार्ग है कि आप अपने सहकर्मी के साथ सुसमाचार की चर्चा कर पाएं। आप को यह तो निश्चित है कि उन्हें सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है परन्तु आपको साहस नहीं होता कि उसे सुसमाचार सुनाएं आपके मन में भय है। आपको मसीह के अन्तर्वास की आवश्यकता है।

आपको आवश्यकता है कि मसीह आपको सामर्थ्य और प्रेम प्रदान करे कि आप कहें, "हां, मैं आपको सुसमाचार सुनाना चाहता हूं। मसीह सब कुछ बदल देता है। यह विश्वास द्वारा, आत्मा का, आशावान, प्रेमी स्वतंत्र जीवन है। एक दूसरे की निःस्वार्थ प्रेमपूर्ण सेवा हेतु स्वतंत्र।"

अतः आपने देखा कि हमने इस धारणा को कैसे गलत समझा और इसका दुरुपयोग किया। मसीही स्वतंत्रता–विश्वास के द्वारा, आत्मा से पूर्ण, आशावान प्रेमपूर्ण जीवन!